9

ओम्री

परमेश्वर के बिना सफलता

वचन पाठ: 1 राजाओं 16:23-28

पसन्द चुनने की छूट एक बड़ी आशीष और गम्भीर ज़िम्मेदारी है। यह विचार इतना गम्भीर है कि परमेश्वर ने हमें अपने व्यवहार और अपने भविष्य चुनने का अवसर दिया है! परमेश्वर, मनुष्य और जीवन के अर्थों से आरम्भ से अन्त तक लदी और भरी इस सच्चाई जितनी किसी और अवधारणा को ढूंढ़ना कठिन है। जब परमेश्वर ने हमें बनाया तो उसने हमारे हृदयों में यदि हम चाहें तो अपने जीवनों से उसे निकाल देने की शक्ति रखी। उस यानी सर्वशक्तिमान, जो संसार का सृष्टिकर्त्ता और हाकिम है, ने हमें उसे ''न'' कहने का अधिकार दिया।

खुली पसन्द और परमेश्वर

छूट का दान यह संकेत देता है कि परमेश्वर ने अपने आप को विचार, निर्णयों और मनुष्य की सनकों के लिए अभेद्य बनाना चुना है। उसे बच्चे चाहिए थे, पुतले नहीं। वह हमसे उसके प्रति प्रेमपूर्वक हमारी पसन्द के कारण आराधना करवाना चाहता है, जो विवेक पूर्ण ढंग से यह पहचानना है कि वह कौन है, न कि हमारी इच्छाओं के विपरीत ज़बर्दस्ती अपनी आराधना करवाना। परमेश्वर ने ठुकराए जाने का जोखिम लेकर अपने आप को दिखाना चुना, ताकि हमें उसकी सेवा करने का अवसर मिल सके, क्योंकि हमने यह निर्णय लिया है कि ऐसा करना सही और अच्छा है। मनुष्य को पसन्द चुनने की शक्ति देने की परमेश्वर की इच्छा को उसका ईश्वरीय अनुग्रह कहा जा सकता है।

परमेश्वर ने हमें अनुसंधान, विश्लेषण और श्रेष्ठतम को चुनने, धार्मिकता और भलाई करने के लिए दिमाग दिया है। जो सही है, उसे चुनना हमारे लिए सम्भव बनाने के लिए यह चुनना सम्भव बनाना आवश्यक था कि गलत क्या है। उसने बुराई के अस्तित्व की अनुमति दी ताकि मनुष्य को भलाई के अस्तित्व को समझने की योग्यता मिल जाए।

खुली पसन्द और मनुष्य

मनुष्य की नैतिक स्वतन्त्रता भी यह ध्यान दिलाती है कि मनुष्य क्या है, और उसका स्वभाव और सार क्या है। वह कोई रोबोट या नासमझ जानवर नहीं बल्कि परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया सोचनीय प्राण है। वह एक जीव है जो सोच सकता है, प्रेम कर सकता है और आदर कर सकता है; वह एक जीव है जो घृणा कर सकता है, तुच्छ जान सकता और ठुकरा सकता है।

मनुष्य को यह स्वतन्त्रता बिना कीमत चुकाए नहीं मिली है, क्योंकि अन्तत: वह उसके प्रति ज़िम्मेदार है, जिसने उसे विचारों और कार्यों के लिए बनाया। परमेश्वर ने हमें यह स्वतन्त्रता देने

का का जोखिम उठाया, पर हम इसे लेने का जोखिम लेते हैं। यदि हम परमेश्वर और सच्चाई को नकारना चुनते हैं तो हमें अपनी की गई गलत पसन्दों का जवाब देना पड़ेगा। अधिकार के लिए ज़िम्मेदारी आवश्यक है।

खुली पसन्द और जीवन

हमें चुनने की छूट देकर परमेश्वर मनुष्य जाति को बनाए रखता है। हां, उसके बनाए रखने की सीमाएं हैं, परन्तु उनके अन्दर कुछ समय के लिए मनुष्य अपनी मर्जी कर सकता है। हम चाहें तो परमेश्वर के बिना और उसकी इच्छा के विरोध में शरीर की शक्ति में पूरी तरह से रह सकते हैं। जीवन के उस क्षेत्र में जो परमेश्वर हमें देता है, हम जीवित रहते, सांस लेते और अपना अस्तित्व रखते हैं। हर पल जो हम जीते हैं, उसमें उसकी भलाई में से लेने के बावजूद परमेश्वर हमें अपने साथ चलने को विवश नहीं करता। पृथ्वी पर समय की अपनी अवधि के लिए, हम उसकी ओर से मिली मानवीय शक्ति में ही रहकर उसकी ओर से दी जाने वाली अतिरिक्त सहायता की उपेक्षा करके उसके बिना रहना चुन सकते हैं।

हमारी ओर से अपने आप को सामर्थी दिखाने को उत्सुक परमेश्वर हमारे जीवनों में सक्रिय रहता है (2 इतिहास 16:9)। वह धर्मी मनुष्य के साथ उसे सामर्थ देने और बनाए रखने के लिए चलता है, परन्तु वह दुष्ट व्यक्ति से अपनी संगति हटा लेता है (नीतिवचन 28:9)। वह मानवीय ऊर्जा को बहकाने या जैसा हम कई बार कहते हैं, ''बाहुबल'' के लिए उसकी ओर मुड़ता है। हर व्यक्ति के हृदय में एक खालीपन है, जिसे केवल परमेश्वर भर सकता है, ''परमेश्वर के आकार का छेद'' है; परन्तु कोई व्यक्ति उस खालीपन को भरने की परमेश्वर को अनुमति दिए बिना जीवना चुन सकता है। परमेश्वर आज्ञाकारी व्यक्ति को प्रोत्साहित करने, शक्ति देने और उसमें रहने की विशेष आशिषें देता है; परन्तु मनुष्य अनुग्रह और स्वीकृति के परमेश्वर के हाथ से इन विशेष आशिषों को पाए बिना जीवित रहना चुन सकता है।

बिना परमेश्वर के वास्तव में व्यक्ति का जीवन कैसा हो सकता है? वह किस प्रकार की प्राप्तियां कर सकता है? उस छूट के कारण जो उसने हमें दी है, परमेश्वर ने मनुष्य को उसकी इच्छा और आत्मिक परिवार के दायरे से बाहर भी एक सीमा तक दक्षता पाने की अनुमति दी है। उसके बिना किसी सीमा तक सफलतापूर्वक जीवित रहने की यह अनुमति परमेश्वर के अनुग्रह और उसकी भलाई के साथ-साथ उस नैतिक छूट को भी दिखाती है, जो उसने हमें दी है।

परमेश्वर के बिना प्राप्ति का जीवन इस्राएल के सातवें राजा ओम्री के जीवन से पता चलता है, जिसने 885 से 874 ई.पू. तक चार या पांच साल तक विभाजित शासन के दौरान और छह या सात साल तक एकमात्र राजा के रूप में राज किया।[1] वह तीसरे राजवंश का संस्थापक था, जो तीन पीढ़ियों तक रहा और उसके चार राजा हुए। निश्चय ही वह उत्तरी राज्य का सबसे योग्य और आक्रमकारी राजा था।

> यहूदा के राजा आशा के इकतीसवें वर्ष में ओम्री इस्राएल पर राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा; उसने छह वर्ष तो तिर्सा में राज्य किया (16:23)।

ओम्री के बारे में विशेष ध्यान देने वाली और विचार उत्पन्न करने वाली बात यह है कि वह परमेश्वर के बिना जिया। उसने अद्‌भुत सफलता पाई, परन्तु यह उसने भुजा के बल से पाई न कि ईश्वरीय सामर्थ के द्वारा। वह हमें उन ऊंची प्राप्तियों का स्मरण कराता है जो परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई छूट की पसन्द के कारण पा सकता है।

उदाहरण के रूप में ओम्री का इस्तेमाल करते हुए देखें कि परमेश्वर की मनुष्य को पसन्द की छूट देने से मनुष्य परमेश्वर के बिना कैसे रहता है।

शक्तिशाली सामर्थ

पहले तो ओम्री ने शरीर में, मानवीय ऊर्जा में बड़ी सामर्थ पाई। वह एक प्रसिद्ध सिपाही बन गया, जिसका इस्राएल के बाहर भी युद्ध के मैदान में उसके कौशल के कारण नाम हो गया। जो योग्यता उसमें थी और पाई उसे पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किए दो शब्दों ''जो वीरता'' में प्रकाशमय किया गया है। 16:27 में उसके जीवन में संक्षेप के भाग के रूप में इन शब्दों पर ध्यान दें:

> ओम्री के और काम, जो उसने किए, और *जो वीरता* उसने दिखाई, यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?

जीवन के अपने मूर्तिपूजक विचार में भी ओम्री सम्भवतया कौम को विनाश से बचाने का माध्यम है। तिब्नी की मृत्यु के बाद ओम्री की शक्तिशाली अगुआई से एक डावांडोल देश में स्थिरता आ गई। फूट से कमज़ोर हुआ इस्राएल अरामी और अश्शूरी राज्यों की चढ़ाई के लिए अभेद्य था, जो आस-पड़ोस में प्रमुख शक्तियां बन गई थीं। इस्राएल में तुरन्त मज़बूत दिशा न होती तो देश निश्चय ही जीत लिया जाता। ओम्री ने आवश्यक अगुआई दी।

ओम्री की अगुआई इतनी शक्तिशाली थी कि अश्शूरी हाकिमों अदद-निरारी, तिग्लत-पिलेसेर, और सरगोन ने पलिश्तीन को एक सदी बाद भी जब ओम्री का राजवंश खत्म हो चुका था ''ओम्री का घर'' कहा। बिना किसी संदेह के वह इस्राएल का सबसे योग्य अधिकारी था।

परन्तु याद रखें कि ओम्री की सामर्थ प्रभु की सामर्थ नहीं बल्कि शरीर की सामर्थ थी। यह कहना भ्रमित करने वाला है, जैसा कि कई लोग करते हैं कि कोई भी मानवीय प्राप्ति प्रभु की सामर्थ से मिलती है। परमेश्वर इसकी अनुमति देता है, परन्तु आवश्यक नहीं कि यह उसी ने दी हो। ओम्री मजबूत था, परन्तु प्रभु में नहीं। दाऊद प्रभु में मजबूत था, जबकि ओम्री काया में मजबूत था। दोनों में फर्क को समझें।

आज आस-पड़ोस में देख कर हम संसार को शक्तिशाली साम्राज्यों, सफल संगठनों और जबर्दस्त लहरों में देख सकते हैं जो मानवीय दूर-दृष्टि, ऊर्जा और अथक परिश्रम से बनी है। वे वे परमेश्वर की ओर से नहीं बल्कि मनुष्य की सामर्थ से हैं। यह तथ्य कि युद्ध जीतने के लिए कोई व्यक्ति सेना की अगुआई करता है, टीम को जीतने के लिए अगुआई करता है या सेना बनाने के लिए किसी समूह की अगुआई करता है इस बात का प्रमाण नहीं है कि परमेश्वर उनके साथ है। ये सब चीज़ें परमेश्वर को साथ लिए बिना हो सकती हैं। परमेश्वर ने लोगों को दिमाग, ऊर्जा और यदि वे चाहें तो उसके बिना प्राप्ति करने की छूट दी है।

कुछ साल पहले एक जबर्दस्त धावक का नाम पूरी दुनिया में छा गया। उसका नाम हर ज़बान पर होता था। वह जब भी खेलता, जीत ही जाता। उसका नाम ही ''बेहतरीन'' हो गया था। उसके प्रतिद्वंद्वी उसके नाम से डरते थे। ऐसा लगता था मानो परमेश्वर का हाथ उसके ऊपर हो और वह हार नहीं सकता। साल बीतते गए, अपने ''शानदार दिनों'' में उसके जीने का ढंग सबको मालूम पड़ गया था। वह अपने पाप, स्वार्थ और दूसरों के साथ अभद्र व्यवहार के लिए बदनाम था। सफलता उसने स्वाभाविक योग्यता, तैयारी और मानवीय बुद्धि से यानी ताकत से पाई थी। उसने इसे परमेश्वर की संगति और उसकी विशेष अगुआई के बिना पाया था।

ओम्री का भी यही हाल था। उसके पास ताकत थी, चाहे उसकी आत्मा या मन परमेश्वर की बात नहीं मानता था। लोग उसे देखकर कहते होंगे, ''सचमुच परमेश्वर की आशीष इस व्यक्ति को मिली है!'' परन्तु वास्तविकता में वह परमेश्वर की संगति से बाहर था। उसे स्वाभाविक गुण और योग्यता तो मिली थी, परन्तु पवित्र शास्त्र में हमारे पास यह गवाही है कि वह दुष्ट था और परमेश्वर की इच्छा का लगातार उल्लंघन करता था।

व्यावहारिक दर्शन

शरीर की ऊर्जा में ओम्री ने एक और ढंग जिससे श्रेष्ठता पाई थी, वह था व्यावहारिक बुद्धि और दर्शन का उसका उपयोग। कौम की अगुआई पर ध्यान लगाते हुए उसने निर्णय लिया कि एक नई राजधानी की आवश्यकता है जिसकी रक्षा आसानी से हो सके और जो देश के लिए अधिक उपयुक्त हो। उसने नई जगह के लिए सामरिया को चुना। यारोबाम से ओम्री तक के समय में शकेम, पनुएल और तिर्सा का इस्तेमाल राजधानियों के रूप में हुआ था। परन्तु ओम्री ने इस बात को समझा की वे अपर्याप्त थीं। सम्भावनाओं का पता लगाने के बाद उसने एक पहाड़ी का चयन किया, जो शेमेर नामक आदमी की थी। उसने इस पहाड़ी का नाम ''सामरिया'' रखा, जिसका अर्थ सम्भवतया ''मजबूत पहाड़ी'' है।

> और उसने शेमेर से शोमरोन पहाड़ को दो किक्कार चांदी में मोल लेकर, उस पर एक नगर बसाया; और अपने बसाए हुए नगर का नाम पहाड़ के मालिक शेमेर के नाम पर शोमरोन रखा (16:24)।

शोमरोन पहाड़ी शकेम के उत्तर पश्चिम में सात मील दूर थी। यह तीन सौ फुट ऊंची और पहाड़ों के बीच में थी, जो किसी भी ओर से आने वाले हमलावरों को चढ़ाई करने के लिए विवश करती थी। इसके अलावा यह युद्ध नीति के हिसाब से बनी थी, क्योंकि इसमें उत्तर से दक्षिण तक के व्यापारिक मार्ग थे।

राजधानी बनाने के लिए इस जगह के चयन के बारे में ओम्री के दर्शन और बुद्धि की पुष्टि इतिहास ने की है। शोमरोन 722 ईस्वी में उत्तरी राज्य के अन्त तक देश की सम्मानित राजधानी रहा।

सन्तों के पास बुद्धि का कोना नहीं होता। मूर्तिपूजक व्यक्ति कई बार अपने दिमाग का इस्तेमाल करता है और ऐसे अच्छे निर्णय लेता है, जिनसे समाज और देश की भलाई होती है।

परन्तु उसका ठोस निर्णय लेने का अर्थ यह नहीं है कि अन्त में परमेश्वर अपने आप उसके साथ होगा। हो सकता है कि इसका इतना ही अर्थ हो कि वह अच्छा निर्णय लेने के लिए परमेश्वर द्वारा उसे दी गई सद्‌बुद्धि का इस्तेमाल कर रहा है। जब अच्छे निर्णय लिए जाते हैं तो परिणाम आम तौर पर अच्छे ही होते हैं।

मैं ऐसे माता-पिता को जानता हूं जो मूर्तिपूजक थे, परन्तु अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के बारे में उनकी पसन्द बहुत अच्छी थी। वे उनकी सेहत की रक्षा करना चुनकर और उन्हें अच्छा भविष्य देना चुनकर अपने बच्चों के साथ समय बिता रहे थे; परन्तु फिर भी वे अपने जीवनों में परमेश्वर से रहित थे।

एक साल टीवी पर एक शो में किसी परिवार को धन्यवाद का भेजन इकट्ठे खाते दिखाया गया था। उनका आदर्श, उच्च वर्ग के परिवार के द्वारा प्रेम, अपनापन, स्वीकृति, शान्ति और मेल-मिलाप दिखाया गया था। खाना खाने के लिए तैयार होने पर पिता ने हर एक से पूछा कि वह बताए कि वह किस बात के लिए धन्यवादी है। मेज़ पर एक के बाद एक सब अपने-अपने धन्यवादी होने की व्याख्या करते रहे। तौ भी एक विचार जो किसी के मन में नहीं था, वह यह था कि परमेश्वर का किसी ने नाम नहीं लिया। इस परिवार ने परमेश्वर को कोई धन्यवाद नहीं दिया। इससे आपका दिल टूट जाएगा। यह तस्वीर आमतौर पर देखी जाती है। मकान, परिवार, खाना, मनोरंजन और अपनापन सब अपनी जगह ठीक हैं, पर ऐसा जीवन परमेश्वर के बिना है!

ओम्री बेशक एक समझदार व्यक्ति था। उसमें देश के लिए दूर-दृष्टिता थी। उसने कुछ अच्छे निर्णय लिए। तौ भी उसमें एक खतरनाक काला धब्बा था कि उसका जीवन पूरी तरह परमेश्वर के बिना था। उसे सहारा देने वाले केवल मांस के हाथ थे, परमेश्वर की अनादि भुजाएं नहीं।

स्थायी बदनामी

परमेश्वर के बिना ओम्री की एक और प्राप्ति अपनी ख्याति थी। उसे जो प्रसिद्धि मिली, वह कुछ ही लोगों को प्राप्त हुई थी। ओम्री का नाम श्रद्धा से इस्राएल में ही नहीं, बल्कि आने वाले वर्षों के लिए इस्राएल के बाहर भी लिया जाता था।

वह पहला यहूदी राजा है, जिसका नाम दो बार मोआबी पत्थर पर लिखे जाने से *अश्शूरी शिलालेखों* में मिलता है। 19 अगस्त 1868 के दिन एक जर्मन मिशनरी ने दिबोन के प्राचीन मोआबी नगर के खण्डहरों के निकट डेरा लगाया। एक शेख ने उसे बताया कि उसके तम्बू से चलकर दस मिनट की दूरी पर एक शिलालेख वाला पत्थर है। वहां पहुंचकर उसने ऊपर से लगभग अर्धचक्र वाली गोल तीन फुट दस इंच ऊंची, दो फुट चौड़ी और साढ़े दस इंच मोटी काली बेसाल्ट की सलेब देखी। बाद में इस पर के शिलालेख पर चौंतीस लम्बी लाइनें मिलीं।[2]

पत्थर को साफ करने, बड़ी मेहनत और कोशिश से अन्त में उसका अनुवाद किया गया। पांचवीं और सातवीं पंक्तियों में ओम्री का नाम दिया गया है। मोआब के राजा मेशा द्वारा लिखित पत्थर पर इन पंक्तियों में ओम्री के विषय में कहा गया है:

> ओम्री इस्राएल का राजा था और उसे मोआब को कई दिनों तक सताया, ...
> ... अब ओम्री ने मदेबा के पूरे देश पर कब्जा कर लिया था और अपने दिनों और अपने

पुत्रों [या अपने पुत्र] के आधे दिनों, चालीस साल तक इसमें रहा; ...[3]

मोआबी राजा मेशा, जिसने पत्थर पर शिलालेख लिखा, का नाम 2 राजाओं 3:4 में मिलता है:

> मोआब का राजा मेशा बहुत सी भेड़-बकरियां रखता था, और इस्राएल के राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख मेढ़ों की ऊन कर की रीति से दिया करता था।

पत्थर पर मेशा डींग मार रहा था। उसके पिता को ओम्री ने हरा दिया था, परन्तु मेशा उस भूमि को वापस लेने में सफल रहा था जो उसके पिता से छिनी थी। मेशा ने इस बात में महिमा की कि वह इलाका वापस लेने में कामयाब रहा था। यह पत्थर मेशा के शासन में बाद में लिखा गया था, जो अहाब के मरने के बाद ही होगा। पत्थर से यह पता चलता है कि अपने शासनकाल में ओम्री कितना शक्तिशाली था। यह इस बात की पुष्टि करता देता है कि मोआब जैसे देश को हराने के लिए हाल ही में विद्रोह के कारण कमज़ोर हुआ ओम्री अपने देश से पर्याप्त सेना खड़ी कर पाया था। इसका अर्थ यह है कि वह न केवल उस देश को जो उसके पास था बनाए रखने में बल्कि उसे बढ़ाने के लिए भी सक्षम व्यक्ति था। मेशा की डींग मारने का ढंग ऐसा होगा जिसमें वह कह रहा हो, ''तुम्हें मालूम है कि सबसे बड़ा आदमी कौन है ? मैंने ज़मीन वापस ले ली, जो उसने ली थी। इसका अर्थ है कि वास्तव में महान मैं ही हूं, मुझसे बड़ा कोई नहीं है!''

हां, ओम्री इस्राएल में और अन्यजातियों में प्रसिद्ध हो गया था, परन्तु उसने यह प्रसिद्धि परमेश्वर की संगति के बिना पाई थी। बाइबल उसकी आत्मिक स्थिति के बारे में बताने में समय नहीं गंवाती। यह कहती है कि वह उन सबसे दुष्ट था, जो उससे पहले हुए थे।

> और ओम्री ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था वरन उन सभों से भी जो उससे पहले थे, अधिक बुराई की। वह नबात के पुत्र यारोबाम की सी सब चाल चला, और उसके सब पापों के अनुसार जो उसने इस्राएल से करवाए थे, जिसके कारण इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को उन्होंने अपने व्यर्थ कर्म से क्रोध दिलाया था (16:25, 26)।

उसने अपने पुत्र अहाब का विवाह ईज़ेबेल से करवाया, सम्भवतया अपने देश और सोर के बीच समझौता पक्का करने के लिए, जो ऐसा सम्बन्ध था कि आने वाले वर्षों में इस्राएल के लिए परेशानी का कारण होना था। अहाब के लिए कहा गया है:

> उसने तो नबात के पुत्र यारोबाम के पापों में चलना हल्की सी बात जानकर, सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईज़ेबेल को ब्याह कर बाल देवता की उपासना की और उसको दण्डवत किया (16:31)।

ओम्री बिना परमेश्वर के चला और उसका पुत्र उसके व्यवहार से प्रभावित हुआ।

सारांश

ओम्री इस्राएल के महानतम राजाओं में से एक था। उसने देश के लिए एकता, प्रभावशाली

सेना और अन्तरराष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलाई। उसमें सामर्थ, दर्शन और ख्याति थी। परन्तु उसकी सफलता शारीरिक अर्थात भौतिक और मानवीय थी।

उसके द्वारा स्थापित राजवंश ने अपने से पूर्व के सभी लोगों को दुष्टता में मात दे दी, जिससे ''ओम्री के कानून'' यहोवा की व्यवस्था के विपरीत चलने का उपनाम बन गए। बाद में मीका के समय में उसके व्यवहार के कारण किसी को फटकारने के लिए कहा जाता था, ''तुम्हारा जीवन ओम्री के नियमों के अनुसार है।'' मीका 6:16 कहता है, ''वे ओम्री की विधियों पर, और अहाब के घराने के सब कामों पर चलते हैं; और तुम उनकी युक्तियों के अनुसार चलते हो ।...'' आज हम कह सकते हैं, ''तुम्हारा व्यवहार इतना खीज चढ़ाने वाला है कि ऐसा लगता है जैसे तुमने जीने के ढंग के लिए ओम्री की विधियों वाली पुस्तक का कोई पन्ना निकाल लिया हो।''

ओम्री ने यहूदा के राजा आसा के अठतीसवें वर्ष में अपने पुत्र को गद्दी दी। उसके बारे में अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता। जब किसी की मौत होती है, तो हमें यह कहना अच्छा लगता है कि वह परमेश्वर के साथ रहने के लिए चला गया या किन्हीं ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है। परन्तु ओम्री के लिए ऐसा कुछ नहीं कहा जा सकता था। उसके लिए क्या कहा जा सकता है, जिसका जीवन परमेश्वर के बिना गुजरा हो? केवल तीन बातें कि वह मर गया, दफ़ना दिया गया और उसकी जगह उसका बेटा राजा बन गया।

> निदान ओम्री अपने पुरखाओं के संग सो गया और शोमरोन में उसको मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र अहाब उसके स्थान पर राज्य करने लगा (16:28)।

ओम्री का जीवन और मृत्यु इस सच्चाई के खामोश गवाहों के रूप में खड़े हैं कि जीवन में परमेश्वर के बिना पाई गई कोई भी सफलता खोखली और खाली है और अन्त में आशाहीन है। हम में से हर किसी को जो स्वतन्त्रता परमेश्वर की ओर से दी गई है, उसके कारण हम उसके बिना रहना, सोचना, और जो चाहे कहना चुन सकते हैं। परन्तु यदि हम परमेश्वर के बिना रहना चुनते हैं तो हमें उस खालीपन का अहसास होगा जिसे केवल परमेश्वर ही भर सकता था। हमें परमेश्वर के उपाय की छाया भी नहीं मिलेगी, जो केवल परमेश्वर की सन्तान को ही मिलती है। सबसे बढ़कर अन्तिम न्याय के दिन हिसाब देने के लिए उसके सामने जाने पर हमारे जीवनों पर ''असफल'' का ठप्पा लग जाएगा, चाहे जीवन में हमने कितनी भी सफलता क्यों न पाई हो। इस संसार में हम परमेश्वर के बिना सफलता को नाप सकते हैं, पर उसकी संगति के बिना हमारा जीवन वैसा नहीं हो सकता जैसा उसने चाहा था। यदि इस जीवन में हम उसके बिना चलते हैं तो हमें अनन्तकाल में उसके बिना दूर तक चलना पड़ेगा।

सीखने के लिए सबक:

बिना परमेश्वर के सफलता को नापा तो जा सकता है, पर ये व्यर्थ और फलहीन है।

टिप्पणियां

[1]कहा जाता है कि यहूदा के राजा आसा के इकतीसवें वर्ष से आरम्भ करके ओम्री ने बारह साल शासन किया (1 राजाओं 16:23), परन्तु यह भी कहा जाता है कि आसा के सत्ताइसवें वर्ष में जिम्री ने तिर्सा में सात दिन राज किया और ओम्री के गद्दी पर बैठने पर उसे ओम्री द्वारा कत्ल कर दिया गया था (1 राजाओं 16:15)। कहा जाता है कि बाद में आसा के अड़तीसवें वर्ष में अहाब राज करने लगा (1 राजाओं 16:29)। आसा के इकतीसवें वर्ष में ओम्री के शासन आरम्भ करने का ध्यान (1 राजाओं 16:23) तिब्नी की मृत्यु के बाद उसके अकेले के शासन के सम्बन्ध में होना चाहिए। [2]जॉन डी. डेविस, ''मोआाबाइट स्टोन,'' *डेविस डिक्शनरी ऑफ द बाइबल,* संशो. संस्क. (पृष्ठ नहीं: ट्रस्टीज़ ऑफ द प्रैसबिटेरियन बोर्ड ऑफ़ पब्लिकेशन एंड सब्बथ स्कूल, 1898; रिप्रिंट, नैशविल्ले, टैनिसी: द वर्सिटी कं., 1973), 530. [3]वही।